अनूप जलोटा
भजन संग्रह

कर्म सिंह
अमर सिंह
पुस्तक विक्रेता
हरिद्वार

।। श्री गणेशाय नमः ।।

अनूप जलोटा

का

भजन संग्रह

समस्त पापों के नाश करने वाले ये "भजन" सुनने अथवा पढ़ने से व्यक्ति पापों से छूट जाता है।

संग्रहकर्ता :

अनिल कुमार शर्मा

मूल्य : १०—००

प्रकाशक—
बी० एस० प्रमिन्दर प्रकाशन
१ ए. इन्द्रा पार्क एक्सटेंशन,
चन्द्र नगर, दिल्ली—५१

मुख्य वितरक—
कर्मसिंह अमरसिंह
पुस्तक विक्रेता बड़ा बाजार
हरिद्वार फोन:(१३३—४२५६१६)

मुख्य वितरक
कर्मसिंह अमरसिंह
पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार
हरिद्वार फोनः—(१३३—४२५६१६)

मूल्य : १०—००

संग्रहकर्ता : अनिल कुमार शर्मा

मुद्रक : गौड़ प्रिंटर्स
१२०, न्यू लायलपुर कालोनी, चन्द्रनगर दिल्ली—११००५१

राधा ऐसी भयी श्याम की दीवानी

गीत—माया गोविन्द   गायक—अनूप जलोटा

राधा ऐसी भयी श्याम की दीवानी—२
कि व्रज की कहानी हो गई २
इक भोली भाली गांव की गंवारन २
तो पण्डितों की वाणी हो गई २   राधा ऐसी...
कान्हा के होते वंसी भी होती बंसी में प्राण न होता

प्रेम की भाषा जानता न कोई कन्हैया को योगी मानता न कोई

विना परिणय के लो प्रेम पुजारिन २
कान्हा की पटरानी हो गई कान्हा की   राधा ऐसी...
राधा की पायल न बजती तो मोहन ऐसा न रास रचाते
निंदिया चुराकर मधुबन बुलाकर उंगली पे किसको नचाते

क्या ऐसी खूशबू चंदन में होती क्या ऐसी मिश्री माखन में होती

थोड़ा सा माखन खिलाके वो ग्वालिन २
अन्नपूर्णा सी दानी हो गई—२   राधा ऐसी...
राधा न होती तो कुज गली भी ऐसी निराली न होती
राधा के नैना न रोते तो जमुना ऐसी काली न होती
राधा न होती तो...राधे के...

सावन न होते झूले न होते राधा के संग नटवर झूले ना होते

सारा जीवन लुटा के वो भिखारन—२
धनियों की राजधानी हो गई—२   राधा ऐसी...

* * *

(4)

सीता के राम राधा के श्याम

गीत—सरस्वती कुमार 'दीपक'   गायक— अनूप जलोटा

सीता के राम राधा के श्याम...

मीरा के गिरधर नागर सूर के घनश्याम सीता के राम

महलों का सुख छोड़ दिया सिया ने राम का साथ निभाया

लक्ष्मी ने धर रूप सिया का जग का पाप मिटाया

महलों का सुख छोड़... लक्ष्मी ने धर...

बना दिया था इस धरती को राम भक्ति का धाम

सीता के राम राधा के श्याम...

राधा ने श्री श्याम सुन्दर संग ऐसा रास रचाया

तीन लोक में श्याम ओर राधा का रूप समाया

राधा ने कोटि कोटि भक्तों के मुख पर राधेश्याम का नाम

सीता के राम राधा के श्याम...

मीरा ने महलों की झूठी महिमा को ठुकराया

तोड़ जगत के बंधन अपने गिरधर को अपनाया मीरा ने

प्रेम दीवनी मीरा को करते हैं भक्त प्रणाम सीता के

सीता राधा और मीरा के सबसे न्यारे स्वामी

सबसे न्यारे सबके प्यारे अंतरयामी सीता राधा

सदा बनाया करते प्रभु जी सबके बिगड़े काम

सीता के राम राधा के श्याम...

* * *

गाते चारों धाम— तेरो नाम

गायक—अनूप जलोटा

धरती गाती अम्बर गाता—२ गाते चारों धाम
(तेरो नाम—तेरो नाम) २...

तेरो नाम ही सच्चा साथी,
तेरे नाम बिन दुनियां क्या थी ? ओ तेरो नाम, तेरो नाम...
बना दिया करता है पल मे—२ सबसे बिगड़े काम
(तेरो नाम—तेरो नाम) २...

तेरा नाम ही सच्ची पूजा
तेरे नाम सा नाम न दूजा, ओ (तेरो नाम) ३...
तेरा नाम ही सच्ची पूजा, तेरे नाम सा नाम न दूजा
सब ही से प्यारा सभी से न्यारा—२ जग में तेरो नाम
(तेरो नाम—तेरो नाम) २...

जपी नाम की जिसने माला, उसके मन में हुआ उजाला
ओ तेरो नाम, तेरो नाम, तेरोनाम...
तेरे नाम की रटन लगी है—२ अब तो आवो राम
(तेरे नाम—तेरो नाम) ३ धरती गाती...

* * *

भजन का अमृत पीने वाले

भजन का अमृत पीने वाले, राम नाम जप जीने वाले
क्यों हो रहा उदास भजन का अमृत...
तेरे मन में रमने वाला—२ सदा है तेरे पास,

भजन का अमृत पीने वाले।
भजन बिना मन रीती गागर, भजन है सरिता
भजन है सागर—२
भजन अमर विश्वास हो भजन अमर विश्वास
(भजन से पूरी हो जाएगी)—२ तेरी टूटी आस
भजन का अमृत पीने वालें
मन को बना ले तू इक तारा
भजन की इतनी गहरी धारा मन को...
घटे न इसमें सांस ही घुटे न इसमें सांस
राम रमैया रक्षा कर रहा है, तींन लोक में राम भजन...
मन मन्दिर में दीप जला ले
भजन से प्रभु को मीत बनाले, मन मन्दिर में...
वो है तेरे पास ही वो है तेरे पास
भजन के अमृत से मिट जाती—२, जन्म जन्म की प्यास
भजन का अमृत पीने वाले, राम नाम जप जीने वाले...

* * *

तेरे हाथ कुछ ना, मेरे हाथ कुछ ना

तेरे हाथ कुछ ना मेरे हाथ कुछ ना—२
होगा वही जो चाहे विधाता, चाहे विधाता, तेरे हाथ...
सुख भी है अपना दुःख भी है अपना
जीवन तो हे बस खले नैन सपना सुख भी है...
जीवन से तेरा हे झूठा नाता ३ होगा वही जो...
पर्वत ये नदियां, फल फूल कलियां...
प्रभु ने बनाई सुख.दुःख की गलियां, पर्वत ये...

सुन्दर जगत को—हैं वो बनाता, हैं वो बनाता
होगा वही जो चाहे विधाता, चाहे विधाता तेरे हाथ...
सांसों की डोरी वो हैं किनारा,
जीवन तो कटता लेके उसका सहारा, सांसों की...
शीश नवा ले वो ही हैं दाता, वो ही हैं दाता २ होगा...

* * *

जीवन रैन अंधेरी

भजन बिना तन राख की ढेर—२ जीवन रैन अंधेरी—३
ओ मूरख मन भटक रहा क्यों
मोहे लोभ में अटक रहा क्यों ओ मूरख...
भूल रहा भगवत की महिमा—३
मति मारी हैं तेरी, जीवन रैन अन्धेरी ३ भजन बिना...
भजन मिलाता हरि से प्यारे, भजन मिटा देता अंधियारे
मौत को भी हरि भजन बनाता, हैं चरणां की चेरी
जीवन रैन अन्धेरी, जीवन रैन अंधेरी भजन बिना...
रोम रोम में राम रमा हैं, राम नाम पर जगत थमा हैं... ३
राम भजन करले ओ भई—३,बात मानले मेरी
जीवन रैन अंधेरी, जीवन रैन अन्धेरी, भजन बिना...

* * *

मेरे मन में बसे हैं राम

गीत—सुभाष जैन 'अजल' गायक व संगीत—अनूप जलोटा

मेरे मन में बसे हैं राम, मेरे तन में बसे हैं राम—३
चीर के छाती बोले अपनी, पवन पुत्र हनुमान
मेरे मन में बसे हैं राम,

सीता हरण किया रावण ने, प्रभु जी थे अकुलाए
हनुमान ने सीता जी को प्रभु सन्देश सुनाए...
हनुमानजी करते आए, प्रभुजी के गुणगान, मेरे मन...
लगी लक्ष्मण जी को शक्ति, देख प्रभु घबराए
भोर से पहले हनुमान जी धौलागिरी आंए
उठ बैठे लक्ष्मण जी, लेकर श्री राम का नाम, मरे मन...
वानर सेना देख के रावण की सेना घबराई
पलक झपकते हनुमत ने लंका में आग लगाई
पलक झपकते हनुमत ने लंका में आग लगाई
बोले प्रभु के साथ, मिटाकर रावण का अभिमान, मेरे मन...

* * *

दो अक्षर का नाम राम का

दो अक्षर का नाम राम का, दो अक्षर की सीता
सीता राम जपे बिन तेरा, सारा जीवन बीता
ओ भजले राम सीता राम, भजले राम सीता राम
सिया राम जपने से मन का, मिट जाता, अंधियारा
जगमग हो जाता मन का, कोना कोना सारा
दो अक्षर का नाम राम का...
दो अक्षर के नाम ने, सबके संकट काटे
सीता माता ने घर–घर में, सुख ही सुख हैं बांटे
सबसे पावन इस धरती पर, राम राम की गीता
सीता राम जपे बिन तेरा, सारा जीवन बीता, ओ भजलें
सिया हरण कर, रावण ने था अपना वंश मिटाया

* * *

फिर भी राम ने उस रावण को परम धाम पहुँचाया
सियाराम का नाम जगत में, पावत राम पुनीता
सीता राम जपे बिन... दो अक्षर का नाम...

बोलो राधे बोलो राधे

श्याम राधे कोई न कहता कहते राधे श्याम–२
जन्म–जन्म के भाग जगा दे इक राधा का नाम
(राधा के बिन, श्याम आधा) २ कहते राधेश्याम
जन्म–जन्म के भाग जगा दे इक राधा का नाम
बोलो राधे–बोलो राधे, बोलो राधे–बोलो राधे,
व्यर्थ पड़ा माला बिन मोती व्यर्थ पड़ा दीपक बिन ज्योति
चन्दा बिन चांदनी कैसी सूरज बिना धूप न होती
व्यर्थ पड़ा माला... चन्दा बिना चांदनी...
बिन राधा के कहां हैं पूरा, नट नागर का नाम
(बोलो राधे–बोलो राधे) २
साथ हैं जैसे जल की धारा, साथ हैं जैसे नदी किनारा–२
साथ हैं जैसे नील गगन के सूरज चन्दा तारा–तारा–२
वैसे इनके बिना अधूरा मन वृदावन धाम
(बोलो राधे–बोलो राधे) २
श्री राधा को जिसे भुलाया उसने अपना जन्म गंवाया–२
धन्य हुई वह वाणी जिसने राधेश्याम नाम हैं गाया
श्री राधा को जिसने गाया... धन्य हुई वह...
उनका सुमिरन करे बिना कब मिलता हैं विश्राम
राधे बोलो राधे–बोलो २ राधा के बिना श्याम आधा...
गीत–सरस्वती कुमार 'दीपक' * * * गायक व संगीत–अनूप जलोटा

जब प्राण तन से निकले

(गायक—अनूप जलोटा)

इतना तो करना स्वामी जब प्राण तनसे निकले।
गोविन्द नाम लेके जब प्राण तन से निकले।।
श्री गंगाजी का तट हो जमुना का बंशी बट हो।
मेरा सॉवरा निकट हो जब प्राण तन से निकले।।
पीताम्बरी कसी हो छवि मन में ये बसी हो।
होठों पे कुछ हँसी हो, जब प्राण तन से निकले।।
जब कण्ठ प्राण आये कोई रोग न सताये।
यम दरस न दिखाये जब प्राण तन से निकले।।
उस वक्त जल्दी आना नहीं श्याम भूल जाना।
राधे को साथ लाना जब प्राण तन से निकले।।
एक भक्त की हैं अर्जी खुदगर्ज की हैं गर्जी।
आगे तुम्हारी मर्जी जब प्राण तन से निकले।।

* * *

कपि से उरिन हम नाहीं

जब श्री रामचन्द्रजी १४ वर्ष बनवास के बाद अयोध्या आते है तो राजा राम भाई भरत से वन में हनुमान जी की सेवा,भक्ति का वर्णन करते है वे कहते हैं कि कपि यानि हनुमान जी के हम ऋण नहीं उतार सकते। उनके हम ऋणी हैं

भरत भाई कपि से उरिन हम नाहीं २
सौ योजन मर्यादा समुद्र की ये कूद गयो क्षण मांही—२
लंका जारि सिया सुधि लायो पर गर्व नहीं मन मांही
कपि से उरिन हम नाहीं

* * *

शक्ति बाण लग्यो लक्ष्मण के हाहाकार भयोदल मांहीं
धौलागिरि धर कर ले आओ भोर न होत पायी
कपि से उरिन हम नाहीं...
अहिरावण की भुजा उखाड़ी पैठ गयो मठ मांही
जो भैया हनुमन्त नहीं होते मोहे तो लाखों जग नाहीं
कपि से उरिन हम नाहीं...
आज्ञा भंग कबहूं नाहीं कीनी जहां पठायो तहां जाई
'तुलसीदास' पवनसुत महिमा प्रभु निजमुखकरत बड़ाई
कपि से उरिन हम नाहीं...

* * *

राम ही तारे राम उबारे

राम नाम रटते रहो जब तक घट में प्राण।
कभी तो दीन दयाल के भनक पड़ेगी कान।।
राम रमैया गाये जा राम से लगन लगाये जा-२
राम ही तारे राम उबारे राम नाम दोहराये जा
राम रमैया गाये जा...

सुबह यहां तो शाम वहां है राम बिना आराम कहां है
राम रमैया गाये जा, जीवन के सुख पाए जा-२ राम ही
भटकाये जब भूल भूलैया बीच भँवर जब अटके नैया
राम रमैया गाए जा हर उलझन सुलझाये जा-२ राम

राम नाम बिना जाणा सोया अंधियारे में जीवन खोया-२
राम रमैया गाये जा मनका दीप जलाये जा राम ही तारे

जग में सुन्दर हैं दो नाम

गायक—अनूप जलोटा

जग में सुन्दर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम
बोलो राम, राम, बोलो श्याम, श्याम, श्याम जग में ...

माखन ब्रज में एक चुरावे, एक बेर भिलनी के खावे
प्रेम भाव से भरे अनोखे, दोनों के हैं काम
चाहे कृष्ण कहो या राम, जग में सुन्दर हैं दो नाम
इक ह्रदय से प्रेम बढ़ावे, एक पाप सन्ताप मिटावे
दोनों सुख के सागर हैं और दोनों पूरण काम
चाहे कृष्ण कहो ... जग ... में ...
एक कंस पापी को मारे, एक दुष्ट रावण को संहारे
दोनों दीन के दुःख हरते हैं, दोनों बल के धाम
चाहे कृष्ण कहो या राम जग में ...
एक राधिका संग साजे, एक जानकी संग विराजें
चाहे सीता राम कहो, या बोलो घन श्याम.
चाहे कृष्ण कहो या राम जग में ...

* * *

भज मन-राम चरण सुखदाई

राम चरण सुखदाई-राम चरण सुखदाई
भज मन राम चरण सुखदाई-२ भजमन ...
जेहि चरण से निकसी सुरसरि शंकर जटा समाई
जटा शंकरी नाम पड़यो है २ त्रिभुवन तारन आई
भज मन राम चरण सुखदाई ...

जेही चरणन की चरण पादुका-२ भरत रह्यो लव लाई
सोई चरण केवट धोई लीनो-२ तब हरि नाव चढ़ाई
भज मन राम चरण सुखदाई...
नाई से ना नाई लेत धोबी से ना धोबी लेत-२
दे के मजुरिया ये जाति को ना बिगाडियो
प्रभु आये मोरे घाट तो पार मैंने उतार दीने
जब आऊँगा मैं तोरे घाट तो पार मोहि उतारियो
भज मन राम चरण सुखदाई...

* * *

कान्हा रे तू राधा बन जा

गायक—अनूप जलोटा

कान्हा रे तू राधा बनजा, भूल पुरुष का मान—२
कब होगा तुझको राधा की, पीड़ा का अनुमान, रे
कान्हा रे... कान्हा रे... कान्हा रे तू राधा...
तू चंचल है तू क्या जाने, नारी मन की बात—२
ओ क्यों रहती है राधा के, दो नैनों में बरसात
ओ कान्हा रे... कान्हारे...
तू ही जब ये पीड़ न जाना, फिर क्या तेरा ज्ञान, कब होगा...
प्रेम दिवानी राधा को तू, माखन से ना तोल—२
ओ राधा का मन टूट गया तो, क्या होगा रे बोल,
ओ कान्हा रे... कान्हा रे...
देर नहीं हैं तज दे कान्हा, अपना ये अभिमान—२
कब होगा तुझको राधा की, पीड़ा का अनुमाना रे
तेरे कारण राधा का ये हाल हुआ रे श्याम—२

* * *

ओ राधा के अधरों पे रहता, पल पल तेरा नाम
ओ कान्हा रे ... कान्हा रे ..
ऐसे तो न बन राधा के, दुख से तू अन्जान–२
कब होगा तुमको राधा की, पीड़ा का अनुमान रे

* * *

तुम दुख भंजन हो प्रभु जी

तुम दुख भन्जन हो प्रभु जी–२ ...
कष्ट हरो सब पार उतारो–२ जग के पालन हार प्रभु जी
तुम दुख भन्जन हो प्रभु जी–२ ..
माया अपना जाल बिछाये, क्या क्या रंग दिखाये
मूरख मानव भूला भटका–२ कुछ भी समझ न आये
आप बनाये मोह माया की दुनियां–२
और उलझता जाये, (अब तो आप संवारो प्रभु जी)२ ...
तुम दुख भन्जन हो प्रभु जी–२ ...
पाप बोझ से भारी जीवन, कैसे शरण में रख दूं–२
तृष्णाओं का बड़ा समन्दर–२ उमर डूबती जाये
जीवन की कुछ बाकी घडियां, नाम तुम्हारे कर दूं
शरण में आया उबारो प्रभु जी–२
तुम दुख भन्जन हो प्रभु जी–२
"पंच तत्व" का मानव चोला, पहन के मैं सब भूला
सृष्टि की अति सुन्दर रचना–२ नाम सांस का उसमें झूला
जग को बनाने वाले ईश्वर–२ नाम तेरा ही भूला
नाम की जोत जला दी प्रभु जी–२
तुम दुख भन्जन हो प्रभु जी–२,
कष्ट हरो ..

* * *

सुवह शाम बोल बंदे कृष्ण—कृष्ण—कृष्ण—कृष्ण

गायक व संगीत—अनूप जलोटा

जो तू मिटाना चाहे की तृष्णा—२
सुबह शाम बोल बंदे कृष्णा—कृष्णा—कृष्णा—२ जो तू
कृष्ण नाम पावन पावन कृष्ण नाम प्यारा—प्यारांजो न बोले
कृष्ण—२ जग से वो हारा—हारा कृष्ण नाम
मन का मिटे अंधियारा, बोल कृष्णा—कृष्णा—२ सुवह शाम
जिसको मिली न पीड़ा, सुख का मरम क्या जाने
जो न ध्यावे कृष्णा—कृष्णा नित का धर्म क्या जाने
जिसको मिली न पीड़ा··· जो न ध्यावे···
चाहे अगर उजियारा बोल कृष्ण—कृष्ण—कृष्ण—२
सुबह शाम बोल बंदे कृष्ण—कृष्ण—कृष्ण—२···
छोड़ दे भटकना दर—दर तोड़ दे अहम का घेरा
भूल जा भगत के वैभव जग है दुःखों का डेरा
छोड़ दे भटकना दर—दर···
फिरता है मारा—मारा बोल कृष्ण—कृष्ण सुबह शाम

* * *

तू राम कहे या कृष्ण कहे

गायक—अनूप जलोटा

तू राम कहे या कृष्ण कहे, इस नाम का कोई मोल नहीं
रख राम रत्न धन—ये मन में
है जग में ऐसा बोल नहीं तू राम कहे
ले लेकर नाम यही पावन कितने भवसागर पार हुए—२
इस नाम की महिमा को प्राणी

तू धन दौलत से तौल नहीं रख नाम रत्न···
इस क्षण भंगर जीवन भर में
है नाम यही शीतल सरिता इस क्षण···
पी ले शीतल जल जी भर करके
तू प्यासा तट पर डोल नहीं रख राम रत्न धन···
इस नाम के पावन संजीवन पर कर दे तन मन धन अर्पण
तू अपने जीवन जल में ये
लेते क्यों अमृत घोल नहीं रख नाम रत्न···

* * *

सुमिरन कर ले मेरे मना

गीत—गुरु नानक देव *गायक—अनूप जलोटा*

सुमिरन कर ले मेरे मना, तेरी ये बीती उमर हरिनाम बिना—२

पंछी पंख बिना हाथी दंत बिना नारी पुरुष बिना—२
जैसे पुत्र पिता बिना धेनू क्षी बिना धरती मेह बिना—२

कूप नीर बिना धेनु क्षीर बिना धरती मेह बिना—२
जैसे तरूवर फल बिन हीना—२ तैसे पुरुष हरिनाम बिना
सुमिरन कर ले मेरे मना···

देह नैन बिना रैन चन्द्र बिना, मन्दिर दीप बिना
जैसे पण्डित वेद बिना हीना—२ तैसे पुरुष हरिनाम बिना

सुमिरन कर ले मेरे मना···

काम, क्रोध, मद, लोभ विकारी छोड़ जगत तू संत जना
कहे "नानक" तू सुन भगवंता,इसमें नहीं कोई अपना
सुमिरन कर ले मेरे मना...

गीत—गुरु नानक देव गायक—अनूप जलोटा

* * *

उड़ना तुझे अकेला है

गायक—अनूप जलोटा

दुख से मत घबराना पंछी ये जग दुखका मेला है
चाहे भीड़ बहुत अम्बर पर उड़ना तुझे अकेला है दुख
नन्हें कोमल पंख थे तेरे और गगन की ये दूरी
बैठ गया तो होगी मन की कैसे अभिलाषा पूरी
उसका नाम अमर है जग में
जिसने संकट झेला हे चाहे भीड़

चतुर शिकारी ने रखा है जाल बिछाकर पग—पग पर
फंसे मत जाना भूल से पगले, पछताएगा जीवन भर
लोभ के दाने में मत पड़ना बड़े समझ का खेला है
चाहे भीड़ बहुत अम्बर पर

जब तक सूरज आसमान पर बढ़ता चल तू चलाता चल
घिर जाएगा अंधकार जब बड़ा कठिन होगा पल—पल
किसे पता है उड़चलने का आ जाता कब घेरा है
चाहे भीड़ ... उड़ना तुझे अकेला है

* * *

बोला जय गिरधर गोपाल

सूरदास जी का इक तारा, मीरा की करताल—२
बोलो जय गिरधर गोपाल, बोलो जय गिरधर गोपाल
सूरदास जी का इक तारा ....

हाथ छुड़ाए जात हो, निर्बल जान के मोहे हो हाथ ....
ह्रदय से जब जाओ तो, सबल मैं जानूं तोहे
हाथ छुड़ाकर चले कन्हैया फिर भी साथ न छोड़ा
दर्शन की प्यासी अंखियों ने, हरि से नाता जोड़, हाथ
छोड़ी ममता छोड़ी काया, छोड़ा जग जंजाल
बोलो जय गिरधर गोपाल' २ सूरदास जी का ....
गिरधर नागर की भगति का पाया ऐसा हीरा
राणा जी का विष का प्याला, हंसकर पी गई मीरा
गिरधर नागर की भगति का ....

मीरा गिरधर आगे नाची पहन भक्ति वर मला
बोलो जय गिरधर गोपाल २ सूरदास जी का ....
सूरदास के इक तारे ने, छोड़ी ऐसी गाथा
जिसको सुनकर झुका लिया त्रिभुवन ने अपना माथा
सूरदास के इक तारे ने ....

भक्त की सुनी पुकार, दौड़कर आए नन्दलाल
बोलो जय गिरधर गोपाल—२ सूरदास जी का ....
गायक—*अनूप जलोटा*

* * *

जन्म तेरा बातों ही में बीत गयो

जन्म तेरा बातों ही में बीत गयो—४
रे तूने कवहू न कृष्ण कहयो, रे जन्म तेरा . . .

पाँच बरस का भोला—भोला अब तो बीस भयो—भयो
मकर पचीसी माया कारण—कारण देश—विदेश गयो
पर तूने कवहू नू कृष्ण कहयो रे जन्म तेरा . . .

तीस बरस की मति उपजी—२ तो लोभ बढे नित नयो
माया जोरी तूने लाख करोरी—करोरी
पर अजहु न तृप्त भयो, रे तूने कवहू न कृष्ण कहया . . .
वृद्ध भयो तब आलस उपजी, कफ् नित कण्ठ रहयो—२
संगति कबहु न कीन्ही रे तूने विरथा जन्म गयो
ये संसार मतलब का लोभी, झूठा ठाठ रचौ—२
कहत "कबीर" समझ रे मन मूरख, तू क्यों भूल गयो
रे तूने कवहु न कृष्ण कहयो जन्म तेरा . . .

गीत—*कबीर दास* गायक—*अनूप जलोटा*

* * *

के प्रभु का नाम रटे जग सारा

वो जग का पालन हारा के प्रभु का नाम रटे जग सारा ३ . . .
वो जग का पालनहारा के प्रभु का नाम
राम नाम की ओढ चदरिया क्या देखे दर्पण में
माथे पर चंदन का टीका लेकिन क्या है मन में

अंतर से तू सुमर प्रभ को वो है तेरा सहारा के प्रभ का
तू अपने पापों को धोने गंगा तट पर जाता
हर-हर गंगे-गंगे तू ये किसे सुनाता
मन में जिसके सुन्दर मन्दिर वो ही प्रभु को प्यारा
के प्रभु का नाम रटे जग सारा-२
पाप गठरिया सर पर तेरे कैसा बोझ बढ़ाया
काम क्रोध मद लोभ मोह में जीवन को उलझाया
खोल के सारे बंधन हो जा प्रभु प्रेम मतवारा
के प्रभु का नाम रटे जग सारा वो जग का ...

* * *

राम के भक्त निराले

राम सियाराम जय जय राम सिया राम
हे पवन पुत्र हनुमान राम के भक्त निराले-निराले
संकट मोचन हनुमान विपत्ति हरने वाले
राम के भक्त निराले हे पवन पुत्र हनुमान ...
उगते सूरज को फल समझा उड़ गए और मुंह में रखा-२
देवों की विनय सुनो हरि को मुक्ति देने वाले
राम के भक्त निराले हे पवन पुत्र ... राम सियाराम
बजरंगी बल के सागर हो गूढ़ ज्ञान बुद्धि के आगर हो—२
लंका जाकर सीता की सुधि लाने वाले राम के ...
जल शक्ति बाण लगा लक्ष्मण को
और शेष थे कुछ पल जीवन के जब शक्ति बाण ...
लाके संजीवन उनके प्राण बचाने वाले राम के भक्त

सीताजी ने मणिमाला दी हर दाने को फोड़ के बिखरा दी
निज ह्रदय चीर कर सीता राम दिखाने वाले
राम के भक्त निराले—हे पवन पुत्र हनुमान राम के

दो दिन का जग में मेला

चलती चक्की देख के, दिया कबीरा रोय
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय
दो दिन का जग में मेला सब चला चली का खेला—२
कोई चला गया कोई जावे कोई गठरी बाँध सिधावे
कोई खड़ा तैयार अकेला रे ... सब चला चली ...
माता पिता सुत नर नारी भाई अंत सहायक नाहीं
फिर क्यों भरता पाप का ठेला रे ...
सब चला चली का खेलारे खेला रे ... दो दिन ...
ये तो है नश्वर संसारा भजन तू कर ले ईश का प्यारा
"ब्रह्मानंद" कहे सुन चेला रे ... रे
सब चला चली का खेला रे ... खेला रे खेला रे ...
दो दिन का जग में मेला, सब चला चली का खेला—खेला

त—*ब्रह्मानंद* गायक—*अनूप—जलोटा*

* * *

तेरे मन में राम, तेरे मन में राम

राम नाम की लूट है लूट सके तो लूट
अंतकाल पछताएगा जब प्राण जायेंगे छूट

तेरे मन में राम तेरे तन में राम रोम–रोम में राम रे
राम सुमिर ले ध्यान लगा ले छोड़ जगत के काम रे
बोला राम बोला राम–राम
माया में तू उलझा–उलझा, दर–दर धूल उड़ाये
अबकरता क्यों मन् भारी, अब माया सास छुड़ाए रे
दिन तो बीता दौड़ धूप में ढल जाए ना शाम रे
बोलो राम बोलो–२
तन के भीतर पाँच लुटेरे डाल रहे हैं घेरा
काम क्रोध मद लोभ मोह ने तुमको ऐसा घेरा
भूल गया तू राम रटन भूला पूजा का काम रे
बोलाराम बोलो राम–राम
बचपन बीता खेल–खेले में आई जवानी सोया
देख बुढ़ापा सोचे अब तू क्या पाया क्या खोया
देर नहीं है अब भी बंदे ले ले उसका नाम रे
बोलो राम बोलो राम–राम

* * *

मैंने लीनो गोविंद मोल

मैंने लीनो गोविंद मोल माई रे–रे
कोई कहे सस्ता तो कोई कहे महंगा–महंगा
मैंने लीनो, मैंने लीनो माई री मैंने लीन्हो तराजू तोल
कोई कहे चोरी तो कोई कहे सानी–सानी
मैंने लीनो–२ भज़न का डोल भाई रे मैंने लीना
कोई कहे गोरा तो कोई कहे काला–४

मैने लीनो मैंने लीनो अमोलक मोल
"मीरा" के प्रभु गिरधर नागर—२ (ये तो आवाज २)
प्रभु आवत प्रेम के मोल माई के मैंने लीनो

गीत—*मीरा बाई* संगीत व गायक *अनूप जलोटा*

* * *

श्रीराम लखन, ले व्याकुल मन

श्री राम लखन ले व्याकुल मन कुटिया में लौट जब आए—२ ...
नहीं पाई सिया, अकुलाए, श्री राम
सूंनापन इतना गहरा था, श्रीराम का जी घबराया
सारे पिंजरे थे खुले एक पंछी भी नजर नहीं आया
थे धूल—धूल कलियाँ और फूल, पात—पात मुरझाए ...
श्रीराम लखन, हो व्याकुल मन
सीता के कुछ आभूषण पथ पर इधर—उधर बिखरे थे
अन्याय और दुखभरी सिया की करूणा कथा कहते थे
शोभा सिंगार इक चन्द्रहार देखा तो राम अकुलाए ...
श्रीराम लखन ले व्याकुल मन
आँसू का सागर उमड़ पड़ा सुध—बुध भूले रघुनन्दन
यह हार मेरी सीता का न हो पहचानो सुमित्रा नन्दन
तब चरण पकड़ सिसकी भर—भर लक्ष्मण ने भेद बताए ...
श्रीराम लखन ले व्याकुल मन
कैसे बतलाऊँ क्षमा करो, भैया ये हार न देखा
मैंने जब भी देखा भाभी के चरणों को ही देखा—देखा
वो लाल बरन, भाभी के चरण मेरे तीर्थ धाम कहलाए
श्रीराम लखन हो व्याकुल मन, कुटिया में लौट जब आए

गीत—*माया गोविंद* गायक—*अनूप जलोटा*

* * *

इक वही पार लगाए रे

हरि हरि जप ले मनुवा क्यों घबराए...
इक वही पार लगाए रे इक वही पार लगाए...
झूठे सारे जग के नाते कैसे जग बंधन को काटे
एक है सच्चा नाता जग में सब अर्पण उसके चरणन में
हर पल ये मन प्रभु के ही गुण गाए इक वही...
तेरे नाम की महिमा भारी मीरा भई मोहन मतवारी
तेरा नाम लिया बृज में, तुम आए मुरलीधर गिरधारी
नाम तेरा धारा तेरा मेरे मन को भाए इक वही...
मन मन्दिर अन्दर में मूरत नैनों में हर पल तेरी सूरत
ये तन तेरी महिमा गाए मेरे स्वर में तू रम जाए
गीता राम राधेश्याम जो सुमिरे सुख पाए, इक वही...

* * *

तोसे राम कह्यो नहीं जाय

कैसे बैठा रे आलम में प्राणी तोसे राम कह्यो नहीं जाए रे
तोसे श्याम कह्यो नहीं जाए रे...
भोर भयो मलमल मुख धोयो, दिन चढ़ते ही उदर टटोयो—२
बातन—बातन सब दिन खोयो, साँझ भई पलगों पर सोयो—२
सोचत—सोचत उमर बीत गई काल शीश मण्डलाए रे
तोसे राम कह्यो नहीं जाए रे...
लख चौरासी में भरमायो बड़े भाग से नर तन पायो—२
अब की चूक न जाना भाई लुट न जाए फिर ये कमाई—२
राधेश्याम समय फिर ऐसे बार—बार नहीं आए रे
तोसे राम कह्यो नहीं जाए रे श्याम...

जय गोविंद गोपाला

जय गोविंद गोपाला मनमोहन श्याम कन्हैया
मुरलीधर गोपाला घनश्यामनंद के लाला जय गोविंदा
जगपाल तू रास रचैया गोवर्धन गिरधारी
कितने नाम तेरे नटवर तू सावल कृष्ण मुरारी—२
मोर मुकुट मनहर हों बलिहारी हर ब्रज वाला मुरलीधर—२
तू ही सागर में रमता तू ही धरती पाताल
जहाँ नभ में और जगत में तेरी जय जयकार—२
मेरे मन मन्दिर में स्वामी तुझसे ही उजियारा मुरलीधर...
जिसका कोई नहीं इस जग में उसका मीत कन्हैया
बंसी बजैया रास रचैया काली नाग नथैया—२
राजा हो या दीन भिखारी सबका तू रखवाला मुरलीधर...

* * *

कभी—कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े

जाना था गंगा पार—प्रभु केवट की नाव चढ़े
कभी कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े...
अवध छोड़ प्रभु वन को धाए सियाराम लखन गंगातट आए
केवट मन ही मन हर्षाए घर बैठे प्रभु दर्शन पाए
हाथ जोड़कर प्रभु के आगे केवट मगन खड़े
कभी कभी भगवान को...

प्रभु बोले तुम नाव चलाओ पार हमें केवट पहुंचाओ
केवट कहता सुनो हमारी चरण धूल की माया भरी
मैं गरीब नैया मेरी नावी न होय पड़े कभी—कभी...

केवट दौड़कर जल भर लाया चरण धोए चरणामृत पाया
वेद ग्रंथ जिनके यश गाए केवट उनको नाव चढ़ाए
बरसे फूल गगन से ऐसे भक्त के भाग बढे
कभी कभी भगवान का
चली नाव गंगा की धारा सियाराम लखन को पार उतारा
प्रभु देने लगे नाव उतराई केवट कहे नहीं रघुराई
पार किया मैंने तुमको अब तू मोहे पार करे. कभी—२ भगवान

* * *

भजले राम रमैया पार लगेगी तेरी नैया

राम रमैया राम रमेया—२ राम रमैया...
कृष्ण कन्हैया—कृष्ण कन्हैया—२ कृष्ण कन्हैया...
भजले राम रमैया—रमैया भजले कृष्ण कन्हैया
पार लगेगी तेरी नैया
जाने अन्जाने रस्ते यहाँ के तुझको भुलाने वाले
भूल भी जाए रस्ता अगर तो हैं राम बताने वाले
भज ले राम रमैया... राम सुमिर हो भैया... सु
एक तुम्हारे राम सहारे ये जीवन की डोरी
तू चाहे तो पार लगेगी जीवन नैया मोरी—मोरी
भजले राम रमैया... एक वही रखवैया
नैन हमारे श्याम तुम्हारे रूप में खोए—खोए
कैसी प्रीती जगी मन माला तेरी नाम पिरोए—२
भज ले कृष्ण कन्हैया मनहर बंसी बजैया...

* * *

जिनके हृदय हरि नाम बसे

हरि नाम बसे हरिनाम बसे जिनके हृदय हरिनाम बसे
तिन और का नाम लिया न लिया

जिनके द्वार पग गंग बहे तिन कूप का नीर पिया न पिया
जिनके ह्रदय हरिनाम बसे तिन और का
जिन काम किया परमार्थ का तिन हाथ से दान दिया न दिया
जिनके ह्रदय हरिनाम बसे तिन और
जिनके घर एक सपूत भया तिन लाख कपूत भया न भया
जिनके ह्रदय हरिनाम बसे तिन और...
जिन मात पिता की सेवा की, तिन तीरथ ब्रत किया न किया
जिनके ह्रदय हरिनाम बसे तिन और...
'तुलसीदास' विचार कहें कपटी की मीत किया न किया
जिनके ह्रदय हरिनाम बसे, तिन और का नाम लियो न लियो

गीत—*तुलसीदास* गायक—*अनूप जलोटा*

* * *

मेरा जीवन तेरे हवाले प्रभु

मेरा जीवन तेरे हवाले प्रभु इसे पग पग तू ही संभाले...
भव सागर में जीवन नैया डोल रही है आ रखवैया—२
इसे अब तू आके बचा प्रभु इसे पग—पग...
मोहमाया के बँधन खोलो हे प्रभु अपनी शरण में लेलो—२
इस पापी को अपना ले प्रभु इसे पग—पग...
ये जीवन है तुमसे पाया सब तेरे कोई न पराया—२
पधारो ओ बंसी वाले प्रभु इसे पग—पग...

तूने नाम जपन क्यों

क्रोध न छोड़ा झूठ ना छोडा सत्य वचन क्यों छोड़ दिया
तूने नाम जपन क्यों छोड़ दिया...

* * *

झूठे जग मे जी ललचाकर तूने असल वचन क्यों छोड़ दिया
तूने नाम जपन क्यों छोड़ दिया...
कौड़ी को तो खूब संभाला तूने लाल रतन क्यों छोड़ दिया
तूने नाम जपन क्यों छोड़ दिया
जभी सुमिरन की अति सुख पायो
तुने सुमिरन क्यों छोड़ दिया तूने नाम जपन .
हाल से एक भगवान भरोसे
तूने तन मन धन क्यों न छोड़ दिया तूने नाम जपन...

* * *

कैसी लागी लगन मीरा हो गई मगन

कैसी लागी लगन मीरा हो गई मगन
वो तो गली–गली हरि गुन गाने लगी
महलों में पली बनके जोगन चली
मीरा रानी दीवानी कहाने लगी कैसी लागी...
कोई रोके नहीं कोई टोके नहीं मीरा गोविंद गोपाल
गाने लगी
बैठी संतो के संग रंगी मोहन के रंग
मीरा प्रेमी प्रीतम को मनाने लगी वो तो गली गली...
राणा ने विष दिया मानों अमृत पिया
मीरा सागर में सरिता समाने लगी
दुख लाखों सहे मुख से गोविंद कहे
मीरा गोविंद गोपाल गाने लगी वो तो गली गली...

गीत–मीरा बाई

गायक–अनूप जलोटा

* * *

मन लागा मेरा यार फकीरी

मन लागा मेरा यार फकीरी में ...
जो सुख पायो राम भजन में सो नाहिं अमीरी में
भला बुरा सबका सुन लीजै कर गुजरान गरीबी में
मन लागा मेरा यार ...
प्रेम नगर में रहिनी हमारी भलि बनि आई सबूरी में
हाथ में कुण्डी बगल में सोटा चारों दिशा जागीरी में
मन लागा मेरा यार ...
आखिर ये तन खाक मिलेगा कहाँ फिरत मगरूरी में
कहत कबीर सुनो भई साधो साहिब मिले सबुरी में
मन लागा मेरा यार ...

गीत—संत कबीर दास संगीत व गायक—*अनूप जलोटा*

* * *

आयेगा जब रे बुलावा हरि का

* * *

आएगा जब रे बुलावा हरि का छोड़ के सब कुछ जाना
पड़ेगा—पड़ेगा
नाम हरि का साथ जाएगा और तू कुछ न ले पाएगा—२
आएगा जब रे बुलावा हरि का ...
राग द्वेष में हरि बिसराओ
भुल के निज को जनम गंवायो—२ आएगा जब रे ...
सुमिरन हरि की साँची कमाई
झूठी जग की सब है समाई—२ आएगा जब रे ...
अरजी कर तू हरि से ऐसी
भक्ति मिले मीरा के जैसी—२ आएगा जब रे

हाथ तेरे जीवन की बाजी
भक्ति से कर तू हरि को राजी–राजी आएगा जब रे ...

राम से बड़ा राम का नाम

* * *

राम से बड़ा राम का नाम अन्त में निकला ये परिणाम ...
सिमरो नाम रूप बिन देखे कौड़ी लगे न दाम
नाम के बाँधे खिंच आएंगे आखिर एक दिन राम
राम से बड़ा नाम का नाम ...
जिस सागर को बिना सेतु के लाँघ सके ना राम
कूद गए हनुमान उसी को लेकर राम का नाम
राम से बड़ा राम का नाम ...
वो दिलवाले क्या पायेंगे जिनमें नहीं है राम
वो पत्थर तैरेंगे कैसे जिन पर मिटा हुआ श्रीराम
राम से बड़ा राम का नाम ...

जय शंकर भोले

जय शंकर भोले–जय शंकर भोले
जय शिव शंकर–जय शिव शंकर *
सब देवों में देव निराले जय बम बम भोले जय शंकर भोले
महादेव तुमने ही तो सब देवों का संताप हरा
सागर मंथन में निकला विष तूने अपने कण्ठ लिया
इसीलिए हर प्राणी तुझको नील कण्ठ बोले सब देवों ...
तेरे पास अनेकों बाबा तेरी महिमा न्यारी
तेरे भेद अनोखे सबसे क्या जाने संसारी

तू ही है कैलाशपति तू पर्वत पर डोले सब देवों में ...
शीश तुम्हारे गंगा मैया चन्द्र शिखर पे मोहे
उसको कैसा कष्ट जगत में नाम तेरा जो ले ...
सब देवों में देव निराले जै बम बम भोले जै शंकर

* * *

हम तो बालक तेरे

हम तो तेरे बालक भगवान तुम हो कृपा निधान
कैसे गाऊँ महिमा तेरी कैसे करूं बखान
हरि बोलो हरि बोलो रे—रे
मात पिता गुरू सखा तुम्ही हो तुम्हीं पालन हार
तेरे भरोसे जीवन मेरा तू ही करे पार
तुम हो देवी देवता मेरे तुम हो . जीवन प्राण ...
कैसे गाऊँ महिमा तेरी कैसे करू बखान हरि बोला
तेरे मिलन को मन मेरा दर—दर भटका भगवान
जन्म—जन्म और युगों—युगों से खोजूं तेरा धाम ...
तू मन में ही बैठा था मैं रहा 'सदा' अंजान कैसे गाऊँ
तुमको पाया सब पाया अब नहीं कोई अभिलाषा
इस नश्वर जग से क्या पाया हर कोई जाए प्यासा ...
तेरी शरण में आया मनुवा स्वीकारो. भगवान कैसे गाऊँ

* * *

हरि बोलो हरि बोला

जो नर सुमिरन नित करे सुख अपार वो पाए
लगन लगा हरि नाम की भवसागर तर जाए

हरि बोलो हरि बोलो हरि बोलो मनुवा रे !
पाप कटे दुख मिटै दूर हो अंधेरा हरि बोलो . . .
ध्यान में प्रभु के ये मनुवा यूं लागे
जग की ये माया और ममता भुला दे
एक नाम तेरा प्रभु मन मेरा जपे रे
हरि बोलो हरि बोलो मनुवा रे हरि बोलो . . .
तू ही है दाता तेरे गुण मैं गाऊँ
तेरी शरण में हूं तुझको रिझाऊँ–२
तेरे दर्शन को नयन ये खुले रे हरि बोलो मनुवा रे . . .
जब से है मन में तेरी प्रीत जीगी
तेरे जपन की लगन मन में लगी–लगी
नैनों में तेरी छवि साँझ और सवेरे हरि बोला . . .

गायक–अनूप जलोटा

* * *

राम नाम जो मनवा गाये

राम नाम जो मनवा गाए रे पाप कटे क्षण में सुख पाए रे
सियाराम–सियाराम राम–राम–राम
ये तन तेरा जीवन तेरा मिट जाएगा प्राणी
धन तेरा तेरे संग न जाए क्यों करता मनामानी
प्रभु नाम इक साथ में जाए रे !
पाप कटें क्षण में सुख पाए रे !
पाप कटें क्षण में सुख पाए रे ! सियाराम . . .
क्यूं तुने मन उलझाया ये झूठे बन्धन सारे

* * *

तेरे जाते ही तुझको भूलेंगे—तेरे प्यारे
मनवा तेरा हरि गुण गाए रे
पाप कटे क्षण में सुख पाए रे सियाराम...
जो भी ध्याये वो सुख पाए नाम सदा सुखदाई
हरि नाम ने किने संतो को ये राह दिखाई
भजले भजले राम की माला रे
पाप कटे क्षण में सुख पाये रे राम नाम जो...

* * *

तेरे चरण मेरे मथुरा काशी

तेरे चरण मेरे मथुरा काशी बनवारी ब्रज के वासी
अंखियाँ दर्शन की मतवारी मनमोहन मन के वासी...
तू घट—घट में है समाया तेरी महिमा मैं क्या गाऊं
सब मैंने तुम से पाया अब क्या भेंट चढ़ाऊं
तू ही सबका रखवाला प्रभु मन की जोत प्रकाशी
अंखियाँ दर्शन की मतवारी...
तेरी बंसी की धुन बाजी सबकी सुधबुध खोने लगी
बंसी वट की छैया में तेरी मुरली हर पल गाती
तेरा मोर मुकुट साँवल सूरत अंखियाँ इस छवि की प्यासी
अंखियाँ दर्शन की मतवारी...
मेरा मन तेरा मन्दिर है भगवान इसमें तू ही समाया
मेरे रोम—रोम अन्तर में तूने भक्ति का दीप जलाया
तेरी शरण में हूं अपनाले तेरे द्वारे खड़ा अभिलाषी
अंखियाँ दर्शन की... तेरे चरण मेरे...

* * *

रसना निसदिन भज हरि नाम

रसना निसदिन भज हरि नाम राम कृष्ण श्री कृष्ण राम
दोनों सुख कर आनन्द धाम भजो रामकृष्ण श्रीकृष्ण राम
कान्हा या चितचोर कहो या रघुवर अवध किशोर कहो
प्रतिदिन बोलो आठों धाम भजो राम कृष्ण ...
राधावर के चरण लगो जानकी रमण की शरण चलो
बोलो राम कृष्ण का नाम भजो राम कृष्ण श्रीकृष्ण राम
राघव–सा कोई कृपालु नाहीं माधव–सा कोई दयालु नाहीं
भगत जन के आते काम भजो राम कृष्ण ...
धनुष धारी मुरली धारी, जय रघुवंशी जय बनवारी–२
प्रेम "बिन्दू" दानों का धाम भजो राम कृष्ण ...

गीत–बिन्दू जी   संगीत गायक–*अनूप जलोटा*

* * *

भक्त का मान न टलते देखा

प्रबल प्रेम के पाले पड़कर भक्त प्रेम के पाले पड़कर
प्रभु को नियम बदलते देखा–देखा प्रबल ...
अपना मान टले टल जाए प्रभु का मान टले टल जाए
पर भक्त का मान न टलते देखा–देखा
जिसकी केवल कृपा दृष्टि से सकल विश्व को पलते देखा–२
उसको गोकुल में माखन पर–२ सौ–सौ बार मचलते देखा–२
अपना मान टले टल जाए पर भक्त का ...
जिसका ध्यान बिरंचि शम्भू सनकादिक न संभलते देखा–२
उसको ग्वाल सखा मण्डल में, लेकर गेंद उछलते देखा
अपना मान टले टल जाए पर भक्त का ...

* * *

जिनके चरण कमल कमला के करतल से न निकलते देखा
उनको वृज की कुंज गलिन में कंटक पथ पर चलते देखा...
अपना मान... पर भक्त का मान न टलते देखा
जिस वक्र भृकुटि के वल से सागर सप्त उबलते देखा
उसको मां यशोदा के भय से अश्रु "बिन्दू" दग ढलते देखा
अपना मान टले टल जाए पर भक्त...

गीत—*बिंदु जी*

संगीत व गायक—*अनूप जलोटा*

* * *

श्याम पिया मोरी रंग दे चुरनरिया

श्याम पिया मोरी रंग दे चुनरिया...
रंग दे चुनरिया हो... रंग दे चुनरिया श्याम पिया
लाल न रंगाऊं, मैं हरि न रंगाऊं
अपने ही रंग में रंग दे चुनरिया श्याम पिया मोरी
बिना रंगाए मैं तो घर में न जाऊंगी
बीत ही जाए चाहे सारी उमरिया, श्याम पिया...
जल से पतला कौन है ? कौन भूमि से भारी ?
कौन अगन से तेज है ? कौन काजल से कारी ?
जल से पतला ज्ञान है—और पाप भूमि से भारी
क्रोध अगन से तेज है—और कलंक काजल से कारी
रंग दे चुनरिया... हो रंग दे चुनरिया
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर प्रभु चरणन में हरि चरण में...
श्याम चरण में लागी नजरिया, श्याम पिया मोरी

गायक—*अनूप जलोटा*

गीत—*मीरा बाई*

* * *

माटी कहे कुम्हारसे (दोहे)

मांटी कहे कुम्हार से तू क्या रौंदे मोहे।
एक दिन ऐसा आएगा मैं रौंदूगी तोहे।।
आए हें सो जाऐंगे राजा–रंक–फकीर।
एक सिंहासन चढ़ि चले एक बंधे जंजीर।।
दुर्बल को न सताइये जाकी मोटी हाय।
बिना जीव की हाय से लोप भस्म हो जाए।।
रहिमन धागा प्रेम का ना तोड़ो चटकाए।
टूटे से फिर ना जूड़े–२ गांठ पड़ जाए।।
ऐसी देनी देन ज्यों किन सीखे वो सैन।
ज्यों–ज्यों कर ऊंची करो त्यों–त्यों नीचे नैन।।
देन हार कोई और है भेजन जो दिन रैन।
लोग भरम हम पर करे तासो नीचे नैन।।
तुलसी इस संसार में सबसे मिलिए धाए।
ना जाने किस भेष में नारायण मिल जाऐं।।

* * *

जय जगदम्बे मां

जय जगदम्बे मां जय माँ जय जगदम्बे माँ जय मां
गौरवशाली वैभवशाली तुझको करूं प्रणाम जगदम्बे ...
मुझे बचाते पीड़ाओ से बरद हस्त जो तेरे
तेरे मन्दिर आते जाते पांव थके न मेरे जय मां–मां ...
तूने माता सदा बनाए बिगड़े काम जगदम्बे, ...
तेरी महिमा में क्या गाऊं सारी दुनिया जाने
उसको विपदा कभी न घेरे जो कोई तुझको माने

जय मां जय मां तेरे दो चरणों में देखे मैंने चारो धाम ...
जगदम्बे जय जगदम्बे माँ जय माँ

माता तेरे सुमिरन में ये कैसा अमृत पाया
मोह जगत से दूर हुए भय कोई न मन मे आया
जय मां जय मां तुमको गाऊं तुमको ध्याऊं ..
माता सुबहो शाम जगदम्बे जय जगदम्बे मां

* * *

हरि नाम का प्याला

हरि नाम का प्याला हरे कृष्ण की हाला
ऐसी हाला पी–पी करके चला चले मतवाला
राधा जैसी बाला और वृंदावन का ग्वाला
ऐसा ग्वाला मुरली मनोहर जपो कृष्ण की माला ...
हरिनाम का प्याला हरे कृष्ण की हाला ऐसी माला

हरे कृष्ण का जप हो और हरे कृष्ण की माला
देव ज्योत ले हृदय शुद्ध हो निकले मन की ज्वाला ...
हरि नाम का प्याला ... ऐसी हालत को पी कर

कृष्ण की धुनं में तन हो और हरे कृष्ण में मन हो
ऐसे तन–तन के मन्दिर में कृष्ण डाले माला ...
हरि नाम का प्याला हरे कृष्ण को हाला
हरे कृष्ण में बल है कृष्ण जल और थल है
ऐसे जल–थल नभ में पीली [illegible] की हाला है
हरि नाम का प्याला हरे कृष्ण को हाला ऐसी हाला.

चादर हो गई बहुत पुरानी

चादर हो गई बहुत पुरानी अब सोच समझ अभिमानी

अजब जुलाहे चादर बीनी सूत करम की तानी
सुरदिनी रसिको भरना दीनी तब सबके मन मानी
अब सोच समझ अभिमानी चादर हो गई ...
मैले दाग पड़े पापन के विषयन में लिपटानी
जान के हाथों लाय के भोगों सत संगत के पानी
अब सोच समझ अभिमानी ...
भई मैली और भीगी सारी लोभ मोह में सानी
ऐसी ही ओढ़त उमर गवाई भली बुरी नहीं जानी
अब सोच समझ अभिमानी ...
शंकामति जान प्रिय अपनी है ये वस्तु बिरानी
कहे 'कबीर' ये राख जतन से फिर नहीं हाथ ये आनी
अब सोच समझ अभिमानी ...

गीत—संत कबीर दास

गायक—अनूप जलोटा

* * *

रंग दे चुनरिया हे गिरधारी

रंग दे चुनरिया—३ रंग दे रंग दे चुनरिया
रंग दे चुनरिया ओ हे गिरधारी—३
कोई कहे इसे मैली चदरिया कोई कहे इसे पाप गठरिया
अपने ही रंग में रंग में रंग दे मुरारी रंग दे चुनरिया
म द माया में मन भटकाया सुमिरन [illegible]

प्रभु ये वन्धन खोलो मेरे आया हूं मैं द्वारे तेरे...
जाऊं कहां तज शरण तिहारी रंग दे चुररिया

ये जीवन धन तुमसे पया प्रभु तुम्हीं से ये स्वर पाया
तेरी ही महिमा गाई न कोई मन की माला मन में सोई...
सुमिरन ज्योति जला हितकारी रंग दे चुनरिया

तुम स्वामी हम बालक तेरे सुनो पुकार तुम्हीं हो मेरे
जन्म जन्म का तुमसे नाता तू ही जग का एक विधाता...
एक तुम्हीं से प्रीत हमारी रंग दे चुनरिया

* * *

हे शारदे माँ

हे शारदे माँ—हे शारदे मा !
अज्ञानता से हमे तार दे माँ।।
तुम स्वर की देवी ये संगीत तुझसे
हम स्वर तेरा है हर गीत तुझसे हम हैं अकेले हम हैं अधूरे...
तेरी शरण हम हैं हमें प्यार दे माँ शारदे माँ

मुनियों ने समझी गुनियों ने जानी
वेदों की भाषा पुराणों की वाणी
हम भी तो सकझें हम भी तो जानें
विद्या का हमको अधिकार दे माँ हे शारदे माँ

तू श्वेत वर्णी कमल पे विराजे हाथों में वीणा मुकुट सर पे साजे
मन से हमारे मिटा के अन्धेरे...
हमको उजाला का संसार दे माँ हे शारदे माँ

* * *

हरि को अपना मीत बना ले

(राम सियाराम सियाराम जय जय राम–राम)
हो हरि को अपना मीत बना ले हर दुख से छुटकारा पा ले
(राम सियाराम सियाराम जय जय राम–२ ···)
तन तरूवर पल भर में सूखे आत्मा जिस दिन तन से निकले
प्रिय कोई भी काम न आए बात अभी से तू ये सोच ले
हरि गुण से तू मन को सजा ले हर दुःख से ···
जीवन जब तक तन की शोभा लागे हर प्राणी को प्यारी
जीवन पंछी जब उड़ जाए बन जाए तन मिट्टी कारी
एक हरि से लगन लगा ले हर दुःख ···
भोर भए जब सूरज आए सूरज आए सूरजमुखी फूल खिल जाए
प्रभु का तेज अपार जगत में
मन का अंधियारा मिट जाए
हरि का तेज तू मन में बसा ले हर दुःख से छुटकारा पा ले
राम सियाराम सियाराम जय जय राम ···

* * *

मत कर तू अभिमान रे

बंदे मत कर तू अभिमान रे झूठी तेरी शान रे मत कर ···
तेरे जैसे लाखों आए लाखों इस माटी ने खाए
रहा ना नाम निशान रे बंदे मत कर तू अभिमान रे
झूठी तरी शान रे ···
झूठी माया झूठी काय वो तेरा जो हरि गुण गाया
जप ले हरि का नाम रे बंदे मत कर तू ··· ३

माया का अंधिकार निराला बाहर उजला भीतर काया
इसको तू पहचान रे बंदे मत कर तू अभिमान रे—३ ...
तेरे पास हैं हीरे मोती मेरे मन मन्दिर में ज्योति
कौन हुआ धनवान रे बंदे मत कर तू अभिमान रे—४

* * *

जय गणपति जय गणनायक जय गणेश—२

जंय गणपति जय गणनायक जय गणेश जय गणेश
जय गणपति बन्धन गणनायक तेरी छवि अति सुन्दर सुखदायक ...
जय गणपति जय गणनायक

तू चार भुजाधारी मस्तक सिंदूरी रूप निराला
हे मूषक वाहन तेरी तू ही जग रखवाला
तेरी सुन्दर सूरत मन में तू पालक सिद्धि विनायक ...
जय गणपति वन्दन गणनायक

मन मन्दिर का अंधियारा तेरे नाम से हो उजियारा
तेरे नाम की ज्योति जली तो मन में बहती सुखधारा
तेरो सुमिरन हर पूजन में सबसे पहले फलदालयक ...
जय गणपति बन्दन गणनायक

तेरे नाम को जिसने ध्याया उस पर रहती सुख की छांया
मेरे रोम रोम अन्तर में एक तेरा रूप समाया
तेरी महिमा तू ही जाने शिव पार्वती के बालक ...
जय गणपति वन्दन गणनायक

गायक व संगीत— *अनूप जलोटा*

* * *

प्रभु जी तुम स्वांमी हम दासा

प्रभु जी तु चंदन हम पानी जाकी अंग अंग वास समानी
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी...
प्रभु जी तुम घन वन हम मोरा जैसे चितवन चंद्रचकोरा
प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी...
प्रभु जी तु दीपक हम बाती
जाकी जोत जरे दिन राती प्रभु जी तुम चंदन हम पानी...
प्रभु जी तुम मोती हम धागा
जैसे सोने में मिलन सुहागा प्रभु जी तुम चंदन हम पानी...
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा ऐसी भगती करे "रैदासा"
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी...

गीत—रैदास
गायक व संगीत—अनूप जलोटा

* * *

राम नाम की कथा अमर

राम नाम की अमर कथा राम नाम की अमर कथा
मिटा रही है जो घर घर की घिरी हुई घनघोर घटा
राम नाम की अमर कथा राम नाम की अमर कथा...
बालपने में विश्वामित्र मुनि के संकट को टाला था—२
करी यज्ञ की रक्षा प्रभु ने रक्षा का प्रण पाला था—२
पत्थर बनी अहिल्या का था रघुवर ने उद्धार किया
धनुष तोड़कर जनकपुरी में सीता को स्वीकार किया
राम नाम की अमर कथा—कथा मिटा रही है...
माता वचन निभाया प्रभु ने राज मुकुट को ठुकराया—२
चले गए बनवास अयोध्या के वैभव को बिसराया—२

केवट को भी गले लगाकर भेद.भाव को मिटा दिया
लखन सिया के साथ राम ने सुरसरिता को वार दिया...
राम नाम की अमर कथा—कथा मिटा रही है
कंचन हिरन बने राक्षस ने सीता का मन मोह लिया—२
साधु रूप धरकर रावण ने जब सीता का मन मोह लिया—२
पवन पुत्र ने सोने की लंका में भड़काई ज्वाला
वानर दल के साथ चला था इस धरती का रखवाला...
राम नाम की अमर कथा—कथा मिटा रही है

गीत—सरस्वती का दीपक *गायक—अपूप जलोटा*

* * *

वो काला एक बाँसुरी वाला

वो काला एक बाँसुरी वाला सुध बिसरा गया मोरी रे
वो काला एक बाँसुरी वाला माखन चारे जा नन्द किशोर...
वो कर गयो मन की चोरी रे सुध बिसरा गया मोरी रे
पनघट पे मोरी बैंया मरोड़ी मैं बोली तो मोरी मटकी फोड़ी
पैयाँ पड़ू करूं विनती मैं पर माने ना इक मोरी रे...
सुध बिसरा गया तो मोरी रे वो काला एक
छुप गए फिर तान सुना के कहाँ गयो एक बाण चला के
गोकुल ढूंढा मैंने मथुरा ढूंढी कोई नगरिया ना छोड़ी रे...
सुध बिसरा गया मोरी रे वो काला एक बाँसुरी वाला

* * *

उड़ जाएगा हंस अकेला

उड़ जाएगा हंस अकेला दो दिन का दर्शन मेला...
राजा भी जाएगा जोगी भी जाएगा गुरू भी जाएगा चेला...
उड़ जाएगा हंस अकेला

माता—पिता भाई बंधु भी जायेंगे और न धन का थैला।
तन भी जाएगा मन भी जाएगा तू क्यों भया है गैला।।
उड़ जाएगा हंस अकेला...
तू भी जाएगा तेरा भी जाएगा सब माया का खेला।
कौड़ी—कौड़ी माया जोड़ी संग चले ना अधेला
उड़ जाएगा हंस अकेला...
साथी रे साथी तेरे पार उतर गए तू क्यों रहा अकेला।
राम नाम निष्काम रटो नर बीती जाए है बेला।।
उड़ जाएगा हंस अकेला...

* * *

क्यों पानी में मल—मल नहाये

माला फेरत जुग भया गया न मन का फेर।
कर का मन का डार दे मन का मन का फेर।।
क्यों पानी में मल—मल नहाए
मन की मैल उतार ओ प्राणी मन की मैल उतार...
पाप कर्म तन के नहीं छोड़—छोड़
कैसे होए सुधार क्यों पानी में मल—मल नहाए...
हाड़—माँस की देह बनी है—है
धरी सदा वन द्वार ओ प्यारे मन की मैल...
सत संगत तीरथ जल निर्मल
नित उठ गोता मार ओ प्राणी मन की मैल...
"ब्रह्मानन्द" भजन कर हरि का
जो चाहे निस्तार ओ प्राणी मन की मैल...

गीत—*ब्रह्मानन्द जी*

गायक— *अनूप जलोटा*

* * *

राम है जीवन कर्म है श्याम

राम है जीवन कर्म है श्याम बोलो रहे राम बोलो हरे श्याम...
जो नर दुःख में दुःख नहिं माने नाहीं निंदा अस्तुति जाने
काम क्रोध जेहि परसे नाहीं गुरू कृपा सोही नर सुख पाहीं।...
सुख का विधाता हे तेरो नाम बोला हरे राम
कोटि वेद जाको यश गावे विद्या कोटि पार न पावें
अगम अपार पार नहिं जाको नाम सुमिर सब जन सुख ताको...
अगम पंथ है राम और श्याम बोलो हरे राम

* * *

सुन नाथ अरज अब मेरी

सुन नाथ अरज अब मेरी मैं शरण पड़ा प्रभु तेरी...
तुम मानुष तन मोहे दीना भजन प्रभु तुम्हारा नहीं कीना...
विषयों ने मेरी मति फेरी सुन नाथ
सुत दारा दिक ये परिवारा सब स्वार्थ का है संसार...
विषयों हेतु पाप किए ढेरी मैं शरण
माया में ये जीव लुभाया रूप नहीं पर तुमरा जाना...
पड़ा जन्म मरण की फेरी मैं शरण
भव सागर में नीर अपारा मोहे कृपालु प्रभु करो पारा
''ब्रह्मानन्द'' करो नहीं देरी मैं शरण पड़ा प्रभु तेरी
सुन नाथ सुन नाथ सुन नाथ सुन नाथ अरज अब मेरी

गायक—अनूप जलोटा

गीत—ब्रह्मानन्द जी

* * *

चदरिया राम रस झीनी

कबीरा जब हम पैदा होए जग हंसे हम रोए।
ऐसी करनी कर चला हम हंसे जग रोए।।

चदरिया झीनी रे झीनी हे राम नाम रस झीनी
चदरिया झीनी रे झीनी...
अष्ट कंवल चरखा बनाया पाँच तत्व की पूनी
नौ दस मास बुनन को लागे मरख मैली कीनी
चदरिया... राम नाम रस झीनी झीनी झीनी रे चदरिय...
जब मोरी चादर बन आई रंगरेज को दीनी
कैसा रंग रंगा रंगरेज ने कि लालो लाल कर दानी
चदरिया... झीनी रे झीनी चदरिया राम नाम....
चादर ओढ़ शंका मत करियो ये दो दिन तूमको दीनी चदरिया
मूरख लोग भेद नहीं जाने
दिन दिन मैली कीनी चदरिया–झीनी रे झीनी...
ध्रुव प्रहलाद सुदाम ने ओढ़ी
शुकदेव ने निर्मल कीनी चदरिया
दास 'कबीरं' ने ऐसी आढी ज्यों–की–त्यों धर दीनी चदरिया
राम नाम र झीनी रे झीनी...

गीत–*कबीर दास*

संगीत गायक–*अनूप जलोटा*

* * *

जय सिया राम राम

तन तंबूरा तार मन अद्‌भुत है ये साज।
हरि के कर से बज रहा हरि की है आवाज।।
तन के तंबूरे में–दो साँसों की तार बोले
जय सियाराम–राम जय राधेश्याम श्याम...
अब तो इस के मन्दिर में प्रभु का हुआ बसेरा
मन हुआ मन फेरा छूटा जनम–जनम का फेरा
मन की मुरलिया में सुर का सिंगार बोले

जय सियाराम राम जय राधेश्याम श्याम वन के तंबूरे...
लगन लागी लीलाधारी से जगी रे जगमग ज्योति
राम नाम का हीरा पाया श्याम नाम का मोती
प्यासी दो अंखियों में आँसुओं की धार बोले...
जय सियाराम राम जय राधेश्याम, तन के तंबूरे

* * *

मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो

मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो–खायो
भोर भयो गैयन के पीछे तूने मधुवन मोही पठायो
चार पहर बंसी वट भटक्यो साँझ परे घर आओ
मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो...
मैं बालक बहियन को छोटो ये छींका किस विधि पायो
ये ग्वाल बाल सब बै़र पड़े हैं बरबस मुख लपटायो
मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो ओ मेरी मैया...
अरी अरी ओ मेरी मैया...
अरी प्यारी मैया...
अरे भोली मेरी मैया...
तू जननी मन की अति भोली इनके कहे पतिपायो
मैया ये ले अपनी लकुटि कमरियां
तूने बहुत ही नचायो मेया मोरी मैं नहीं माखन खायो...
मैया मैं नहीं माखन खायो...

जिय तेरे कुछ भेद उपजि है तूने मोहे जानि परायो जायो

"सूरदास" तब हंसी यशोदा ले उर कण्ठ लगायो
नयन नीर भर आयो कन्हैया तै नहिं माखन खायो-४

गीत-सूरदास गायक-अनूप जलोटा

* * *

हरि नाम सुमिर सुख धाम

हरि नाम सुमर सुख धाम जगत में जीवन दो दिन का
सुन्दर काया देख लुभाया—गर्व करे तन का
जरि गई देह—बिखर गई काया ... ज्यूं माला मन का
हरिनाम सुमर सुख धाम...
काम क्रोध में उलझ के प्राणी—मौज करे मन का
काल बली का लगा तमाचा—भूल गया ठन का
हरिनाम सुमर सुख धाम...
झूठ कपट कर माया जोड़ी गर्व करे धन का
सभी छोड़कर चला मुसाफिर—बास हुआ वन का
हरिनाम सुमर सुख धाम...
ये संसार स्वप्न की माया—मेला पल छिन का
'ब्रह्मानन्द' भजन कर बन्दे—नाथ निरंजन का
हरिनाम सुमर सुख धाम...

गीत—ब्रह्मनन्द जी गायक—अनूप जलोटा

* * *

सांवरिया मोरी नैया तरा दे

साँवरिया मोरी नैया तरा दे रे साँवरिया मोरी नैया तरा दे रे
नैया तरा दे पार लगा दे—२

नन्दा नाई सदन कसाई हुई मस्तानी मीरा बाई
ऐंसा ही मुझे मस्त बना दे, रे. नैया तरा दे'''
गज के आकर फंद छुड़ावा द्रपद सुता के चीर बढ़ायो
ऐसा ही मुझे भक्त बना दे रे नैया तरा दे'''
मोह के वश में अर्जुन आया, रूप विराट से हर ली माया
ऐसा ही मुझे रूप दिखा दे रे नैया तरा दे''
साँवरिया मोरी नैया पार लगा दे रे नेया तरा दे पार लगा दे—दे

* * *

भज निस दिन राम चंद्रम्

भज नित दिन रामचन्द्रमृ सुख राजीव लोचन
सकल संकट शोक हर्ता पाप भय सन्ताप मोचन
...
भज निस दिन राम चन्द्रम्
लौ लगा श्रीराम चरणों में हृदय में ज्ञान भर ले
राम जी के नाम धन से भक्ति का भण्डार भर ले
धन्य वो धनवान जोड़े जो हरि हर नाम का धन
...
भज निस दिन राम चन्द्रम्
धाम प्यारे राम जी का ना अयोध्या है ना काशी
भक्त के मन में बिराजे. राम निर्मल मन निवासी
मन का मन्दिर छोड़कर मत जा कहीं तू राम खोजन
...
भज निस दिन राम चन्द्रम्
राम में रम जा तू ऐसे जैसे चंदन में सुगन्धी
भक्ति तोरी बाँध हो जा राम के चरणों का पंछी
राम तो जीवन समर्पित राम तो तन राम तो मन
...
भज निस दिन राम चन्द्रम्

गायक व संगीत— अनूप जलोटा

* * *

राम धुन गा ले रे मेरे मन.

राम श्रीराम कौशल्या के दुलारे राम
राम श्री राम दशरथ प्यारे राम
राम श्रीराम सीता राम रघुपति राघव राजा राम
छाड़कर सारे पागलपन रामधुन गा ले रे मेरे मन . . .
राम कथा शिव पुनि पुनि गाई जगजननी के असि भाई
ब्रह्मा, गणपति गणनायक ने तन–मन किया श्रवण
क्रूर कराल दस्तूर नाकर किस दिन पापों से उकता कर
राम कृपा से मरा मरा जप बदला अपना मन . . .
जिसको सबने ठोकर मारी माना सदा अमंगलकारी . . .
अमर हो गया उस तुलसी का रामचरित गायन . . .
राम का नाम मिले सहारा जनम मरण से हो छुटकारा
माया में मत उलझ नष्ट मत कर अपना ज़ीवन . . .

* * *

बोलो साई नाथ

हरिद्वार काशी मथुरा या वृंदावन का वास
गंगा जमुना मस्जिद इक साईं बाबा बोलो साई नाथ . . .
साँचा साई जग परछाई जग परछाई साँचा साई
हर सुबह हर शाम बोलो साई नाथ . . .
साई रस्ता राही साई ने मंजिल मन चाही
साई सुमरिन साई वन्दन साई अमृत साई चन्दन
साई पूजा और न दूजा शिरडी जैसा धाम
बोलो साई बोलो साई नाथ . . .

बड़ा न छोटा साई के दर हम सब नदियाँ सांई समुन्दर
बाई दीपक साई वाती ज्योति जिसकी सुख बरसाती
धुप छांव में शहर गाँव में
जहाँ—मिले—विश्राम—बोला—साई नाथ...
भूल करें हम माफ करें साई सम सबसे इन्साफ करे साई
ऊंचा नीया कोई न जिसको क्यों न भाएं फिर हम उसको
जीवन दुविधा साई सुविधा बोलो साई नाथ

* * *

बोलो साई बाबा

बोलो जय साई बाबा जय जय साई सदा समान
हर इन्सान के अन्दर जिसने देखा हे भगवान
बोलो जय साई बाबा...
मन्दिर मस्जिद गिरजाघर से किया एक सा प्यार...
जिसने अपनाया था सबकी सेवा का संसार बोलो
कहाँ रहे कया क्या किया नहीं किसी को ज्ञान...
लेकिन सबको दे गया सेवा का वरदान बोला
बाबा में ही राम थे बाबा में ही श्याम
शिर्डी जिससे बन गया सब पूजा का स्थान...
बोलो जय साँई बाबा जय जय साई बाबा

* * *

मैं तेरा द्वार न ढूँढ़ सका साई

वो फूल न अब तक चुन पाया···
मुझमें ही दोष रहा होगा मन मुझको अर्पण कर न सका
तू मुझको देख रहा तब से मैं तेरा दर्शन कर न सका
हर दिन हर पल चलता रहता संग्राम कहीं मन के भीतर
मैं तेरा द्वार न ढूढ़ सका भटक रहा हूं डगर—डगर
क्या दुःख क्या सुख भूल मेरी मैं उलझा हूं इन बातों में
दिन खोया सोने चाँदी में सोया मैं बेसुध रातों में
तब ध्यान किया मैंने टकराया पग से जब पत्थर
मैं तरा द्वार न ढूढ़ सका···
मैं धूप छाँव के बीच कहीं माटी के तन को लिए फिरा
उस जगह मुझे थामा तूने मैं भूले से जिस जगह गिरा
अब तू ही पथ दिखला मुझको सदियों से हूं घर से बेघर
मैं तेरा द्वार न ढूँढ़ सका···

* * *

गायक— *अनूप जलोटा*

साई बाबा हम तो तेरे हैं

जैसे भी है अब हैं साई हम तो तेरे हैं
तेरे रंग में रंगे हमारे साँझ सवेरे हैं
बाबा—हम तो तेरे हैं···
तेरे बारे में कहते हैं सिर्डी वाले लोग

तूने जिसको छुआ न आया उसको कोई रोग
तूने ही हर दीन दुखी के दुर्दिन फेरे हैं
बाबा हम तो तेरे हैं...
दूर—दूर से लोग हजारों आते तेरे द्वार
जो भी तेरे द्वारे आया पया उसने प्यार
तेरा दर वो जहाँ से कोसों दूर अंधेरे
बाबा हम तो तेरे हैं...
जहाँ जहाँ पूजा हो तेरी वहाँ न दुःख का काम
कोई करे सलाम तुझे तो कोई करे प्रणाम
उनको हर पल सुख जो तरी माला फेरे हैं
बाबा हम तो तेरे हैं...

गायक—अनूप जलोटा

* * *

साई नाम दिए जैसा

कन के गहरे अंधियारे में साई नाम दिए जैसा...
जिसने साई—साई गाया उसने जीवन का सुख पया...
साँसों के बहते धागे में साई नाम दिए जैसा...
क्या यात्रा के चौराह मे साइ नाम दिए जैसा
कोई न जिसका इस दुनियां में साई उसकी बाँहें थामे...
बिन चंदा के पतवारे में साई नाम दिए जैसा

गायक—अनूप जलोट

* * *

बाबा मेरे दरस दिखाने आजा

बाबा मेरे दरस दिखाने आजा...
तेरी सुरतिया सबसे प्यारी तेरे दर्श का मैं हूं भिखारी
दर्शन देने आजा—बाबा मेरे दरस दिखाने आजा...
तू है सबसे साँचा सबकी बिगड़ी बात बनाई
पार लगाने आजा बाबा...
सांई तुझे बिन चैन न पाऊं और मैं किसके द्वारे जाऊं
राह दिखाने आजा—बाबा...

गायक—अनूप जलोटा

* * *

गीत तुम्हारे गाता

जहाँ जहाँ मैं जाता सांई गीत तुम्हारे गाता...
मेरे मन मन्दिर में सांई तुमने ज्योत जलाई
बीच भंवर में उलझी नैया तुमने पार लगाई
इस दुनिया के दुखयारों से तुमने जोड़ा नाता
गीत तुम्हारे गाता...
सांई मेरे तुम न होते देता कौन सहारा
इस दुनिया की डगर—डगर पर फिरता मारा—मारा
जिसको किस्मत ठुकरा दे तू उसका भाग जगाता
गीत तुम्हारे गाता जहाँ—जहाँ
मस्जिद मन्दिर गुरुद्वारे में सांई समाए

गंगाजल औरे आवे जमजम तमने एक बनाए
मेरी विनती सुनलो बाबा कत से तुम्हें बुलाता
गीत तुम्हारे गाता जहाँ–जहाँ...

गायक—अनूप जलोटा

* * *

मेरा सांई सभी में समाया

साई राम कृष्ण रहमान सांई गीता वेद कुरान
चाहे राम कहो रहमान कहो चाहे श्याम कहो भगवान कहो...
मेरा साइ। सभी में समाया सब पर उसकी छाया
सांई के दरबार में देखा कोई नहीं है पराया
जो भी उसकी शरण में आया उसको गले लगाया
चाहे कृष्ण कहो या करीम कहो चाहे राम कहो रहीम कहो
मेरा सांई सभी में समाया...
दुनिया भर के सब संतों में साई की बानी
जो भी सुनता उसको लगता है अपनी राम कहानी
चाहे सूर की हो चाहे मीरा की
चाहे नानक की हो या कबीरा की
मेरा साई सभी में समाया...
मुसलमान हो हिंदू सिक्ख हो सब साई के प्यारे
जैन बुद्ध हो या ईसाई सब आँखों के तारे
गीता को पढ़ो या कुरान पढ़ो या पुराण पढ़ो
मेरा सांई सभी में समाया...

हरिओम शरण के भजन

तेरा राम जी करेंगे बेड़ा

राम नाम सोही जानिए जो रमता सकल जहान।
घट घट में जो रम रहा उसको राम पहचान।।
तेरा राम जी करेंगे बेड़ा पार उदासी मन काहे को करे
काहे को डरे रे काहे को डरे रे काहे को डरे
नैया तेरी राम हवाले लहर–लहर हरि आप संभाले–संभाले
हरि आप ही उठावें तेरा भार उदासी मन
काबू में मझधार उसी के हाथों में पतवार उसी के–के
तेरी हार भी नहीं है तेरी हार उदासी मन
गर निर्दोष तुझे क्या डर है, पग–पग पर साथी ईश्वर है–है
जरा भावना से कीजिए पुकार उदासी मन
सहज किनारा मिल जाएगा रे मिल जाएगा मिल जाएगा
सहज किनारा मिल जाएगा रे मिल जाएगा मिल जाएगा
डोरी सोंप के तो देख इक बार उदासी मन

गायक–हरिओम शरण

* * *

स्वीकारो मेरो प्रणाम

विघ्न हरण गौरी के नंदन सुमिरन सदा सहाई रे
तुलसी दास जो गणपति सुमिरे कोटि विघ्न टल जाईरे
वेद पुराण कथा से पहले जो सुमिरे सुखदाईरे
अष्ट सिद्धि नवनिद्धि लक्ष्मी मन इच्छा फलदाई रे

सुख वरण प्रभु नारायण हे दुःख हरण प्रभु नारायण हे
त्रिलोकपति दाता सुखधाम स्वीकारो मेरे प्रणाम
स्वाकारो मेरे प्रणाम प्रभु स्वाकारों मेरे प्रणाम
मन वाणी में वो शक्ति कहाँ जो महिमा तुमरी गान करें
हे अगम अगोचर अविकारी निर्लेप हो हर शक्ति से परे,
हम ओर तो कुछ भी जाने ना,
केवल गाते हैं पावन नाम स्वीकारो मेरे प्रणाम...
आदि मध्य और अंत तुम्हीं और तुम्हीं आत्मा अधारे हो
भक्तों के तुम प्राण प्रभु इस जीवन के रखवारे हो तुम मे
जीवें जनमें तुमसें
और अंत करें तु में विश्राम स्वीकरो मेरे प्राण...
चरण कमल का ध्यान धरूं
और प्राण करे सुमिरन तेरा
दीन आश्रम दीनानाथ प्रभु भव बन्धन काटो हरि मेरा
शरणागत के श्याम हरि हे नाथ मुझे तुम लेना थाम
स्वीकारो मेरे प्रणाम...

गायक—हरिओम शरण

* * *

उद्धार करो भगवान तुमरी शरण पड़े

सियाराम मय जगजानी करहूं प्रणाम जोरि जुगपानी
जपहिं नाम जन आरत भारी मिटहिं कुसकंट होंहि सुखारी
नाम लेत भव सिंधु सुखाहीं करहू विचार सुजन मन मांही
उद्धार करो भगवान तुम्हारी शरण पड़े...

भव पार करो भगवान तुमरी शरण पड़े शरण पड़े उद्धार
कैसे तेरो नाम ध्यायें कैसे तुरी लगन लगातें—लगावें
हृदय जगा दो ज्ञान तमुरी शरण पड़ उद्धार करा...
पंथ मती की सुन—सुन बातें द्वार तेरे तक पहुंच न
पाते—पाते
भटके बीच जहान तुम्हारी शरण पड़े...
तू ही श्यामल कृष्ण मुरारी राम तुम्ही गणपति त्रिपुरारी
तुम ही बने हनूमान तूरी शरण पड़े...
ऐसी अन्तर जोत जगाना हम दीनों को शरण लगाना
हे प्रभु दया निधान तुमरी शरण पड़े उद्धार...

गायक—हरिओम शरण

* * *

ऐंसा प्यार बहा दे मैया

या देवि सर्वभुतेषू दया रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।
दुर्गा दुर्गति दूर कर मंगल कर सब काज।
मन मन्दिरा उज्ज्वल करो कृपा करके आज।।
ऐसा प्यार बहा दे मैया चरणों से लग जाऊं मैं—मैं
सब अंधकार मिटा दे मैया दरस तेरा कर पाऊं मैं ऐसा
जग में आकर जग को मैया अब तक न पहचान सका
क्यों आया हूं कहाँ जाना ये भी न मैं जान सका
तू है अगम अगोचर मैया कहो कैसे लख पाऊं मैं
ऐसा प्यार बहा दे मैया...
कर कृपा जगदम्ब भवानी मैं बालक नादान हूं

नहीं अराधना जप तप जानूं मैं अवगुण की खान हूं
दे ऐसा वरदान हे मैया सुमिरन तेरा गाऊं मैं...
ऐसा प्यार वहा दे मैया
मैं बालक तू मैया मेरी निश दिन तेरी ओट है
तेरी कृपा ही में मेरी भीतर जो भी खोटे है
शरण लगाओ मुझको मैया तुझ पर बलि—बलि जाऊंमाँ...
ऐसा प्यार बहा दे मैया
गायक—हरिओम शरण

* * *

राम रमैया जग रखवारे
राम रमैया जग रखवारे तेरा हमें सहरा हो
जीवन नैया तारन हारे दिल ने तुझे पुकारा हो....
हो राम रमैया हो राम रमैया हो राम रमैया
गणिका गीध अजामिल तारे तारा सदन कसाई
तुलसी के तुम बन गए तारे तारे तारी मीरा बाई
राम रमैया कबीर पुकारे हो गए सब से पार राम रमैया
हो राम रमैया हो राम रमैया हो राम रमैया
जब हम अंश सनातन तेरे क्यों दूरी ये लागे
तु ही कृपा करे जा स्वामी भीतर ज्योति जागे...
दयानिधे हे प्राण प्यारे कर दो घट उजियारा...
राम रामैया" हो राम रमैया हो राम रमैया
द्वार तेरे हम आन पड़े हैं, छोड़ कहाँ हम पायें...
शरण लगाओ प्राण प्यारे रहे न कोई दुखियारा...
हो राम रमैया हो राम रमैया हो राम रमैया
गायक—हरिओम शरण

* * *

दाता एक राम भिखारी सारी दुनिया
दाता एक राम भिखारी सारी दुनिया
राम एक देवता पुजारी सारी दुनिया दाता एक
द्वार पे उसके जा के कोई भी पुकारता
परम कृपा दे अपनी भव से उबारता
ऐसे दीना नाथ पे बलिहारी सारी दुनिया दाता ...
दो दिन का जीवन प्राण कर ले विचार तू
प्यारे प्रभु को अपने मन में निहार तू
बिना हरिनाम के दुखियारी सारी दुनिया दाता ...
नाम का प्रकाश जब अन्दर जगाएगा
प्यारे श्रीराम का तू दर्शन पाएगाज्योति से जिसकी है
उजियारी सारी दुनिया दाता ...

* * *

सबका भला मेरे राम जी करें

माँगे सबकी खैर ओ बाबा माँगे सब की खैर
सबका भला मेरे राम जी करे–करे
एक राम की सारी माया एक हवा और पानी
एक ही जोत जले सब ही में क्यों नही सोचे प्राणी
मन की आँख से देख रे भैया कोई नहीं है गैर ओ बाबा ...
चार दिनों के जीवन को तू रंग ले प्यार के रंग में
मोह माया में बंधना नाहीं जावे ना कोइ संग में
शुभ कर्मो से भर ले झोली कर ले जग की सैर ओबाबा ...
राम है दाता सारे जग का उसको देन है भारी
बिन माँगे वो झोली भरता ऐसा पर उपकारी
उसके नाम काम का सुमिरन करके भवसागर से तरओ बाबा ...

जय नंदलाला जय गोपाला

जय गणेश गणनाथ दयानिधि सकल विघ्न कर दूर हमारे।
मम वंदन स्वीकार करो प्रभु चरन शरण हम आए तुम्हारे।।
जय नंदलाला जय गोपाला जय नंदलाला जय जय
श्री राधे गोविंदा मन भज ले हरि का प्यारा नाम है
गोपाला हरि का प्यारा नाम है
नंदलाला हरि का प्यारा नाम है श्री राधे गोविंदा...
मोर मुकुट सिरा गल वनमाला केसर तिलक लगाए
वृन्दावन की कुँज गलिन में सबको नाच नचाए
श्रीराधे गोविंदा ... जय नंदलाला जय गोपाल...
जमुना किनारे धेनु चरावे माधव मदन मुरारी
मधुर मुरलिया जभी बजावे हर ले सुध बुध सारी
श्रीराधे गोविंदा मन भज ले हरि का...
गिरधर नागर कहती मीरा सूर को श्याम लुभाया
तुका राम और नाम देव ने विट्ठल विठ्ठल गाया
श्रीराधे गोविंदा मन भज ले...
राधा शक्ति बिना ना कोई श्यामल दर्शन पावे
आराधन कर राधें राधें कान्हा भागे आवे श्री राधे...

गायक–हरि ओम शरण

* * *

साई तेरी याद महा सुखदाई

सब कुछ दीन्हा आपने भेंट करूं क्या नाथ ?
नमस्कार की भेंट लो जोडू मैं दोनो हाथ।।
साई तेरी याद महा सुखदाई
एक तू ही रखवाला जग में–में तू ही सदा सहाई साई

तुझको भूला जग दुखियारा सुमिरन बिन मन में अंधियारा
तूने कृपा बरसाई सांई तेरी याद...
मन ही है ये तेरा द्वारा बैठ यहीं पे तुझको पुकारा
प्रेम की ज्योति जलाई सांई तेरी याद...
साँची प्रीती तुम्हारी दाता इस जग का झूठा नाता
हूं चरनन शरणाई सांई तेरी याद...

नाम का दीप जला ले

नाम का दीप जला ले अंधेरा पल भर में मिट जाए
पल भर में मिट जाए अंधेरा पल भर मिट में जाए नाम
जिस ज्योति से जब उजियारा,
वो है ईश्वर प्राण पियारा—पियारा उसमें मनवा रमा ले
अंधेरा पल भर में मिट जाए नाम का दीप...
सत संगत से लौ लग जाता
मन को बना ले प्रेम की बाती—बाती ज्ञान की जोत जगा ले
अंधेरा पल भर में मिट जाए नाम का दीप...
भजन से गूंजे मन का मन्दिर
सुरति समाधि लग जाए फिर—फिर शरण होय आजमा ले।
अंधेरा पल भर में मिट जाए नाम का दीप...

गायक—हरिओम शरण

* * *

कर्म सिंह अमर सिंह पुस्तक विक्रेता, हरिद्वार